क्या कैथोलिक लोग मूर्तियों की पूजा करते हैं?

बाइबल के अनुसार — हाँ, कैथोलिक वास्तव में मूर्तियों की पूजा करते हैं।

परमेश्वर ने निर्गमन 20:4-5 में यह आज्ञा बहुत स्पष्ट रूप से दी है:

“तू अपने लिये कोई खुदी हुई मूरत न बनाना—न किसी ऐसी वस्तु की
मूरत, जो ऊपर आकाश में है या नीचे पृथ्वी पर है या पृथ्वी के नीचे
जल में है।
तू उनके सामने झुकना मत और न उन्हें दण्डवत करना। क्योंकि मैं, यहोवा तेरा परमेश्वर, जलन रखने वाला परमेश्वर हूँ…”
(Exodus 20:4-5, Hindi ERV)

दस आज्ञाएँ परमेश्वर की पवित्रता और इस सत्य को प्रकट करती हैं कि उपासना सिर्फ उसी की होनी चाहिए। इसलिए परमेश्वर ने मूर्ति बनाने, उनके आगे झुकने, या उन्हें पूजने—सबको निषिद्ध किया है (देखें व्यवस्थाविवरण 5:8-9).

समस्या केवल संतों की मूर्तियाँ या तस्वीरें घर में रखने भर की नहीं है। असली समस्या तब होती है जब लोग उन मूर्तियों के सामने झुकते हैं, प्रार्थना करते हैं, धूप-बत्ती जलाते हैं, या उन्हें पवित्र वस्तुओं की तरह स्पर्श करते हैं। बाइबल इन सभी कार्यों को मूर्तिपूजा के रूप

में बताती है।
1 कुरिन्थियों 10:14 में लिखा है:

“इसलिए हे मेरे प्रिय मित्रो, मूर्तिपूजा से दूर भागो।”
(1 Corinthians 10:14, Hindi ERV)

कैथोलिक चर्च सीधे-सीधे मूर्तियों के सामने झुकने, प्रणाम करने और उन्हें सम्मान देने की शिक्षा देता है—और यह व्यवहार व्यावहारिक रूप से पूजा का ही रूप बन जाता है।
याद रखें, मूर्ति सिर्फ नेबूकदनेस्सर की विशाल सोने की प्रतिमा (दानियेल 3) जैसी बड़ी ही नहीं होती; परमेश्वर की दृष्टि में छोटी से छोटी प्रतिमा भी मूर्ति ही है।
भजन संहिता 115:4-8 में मूर्तियों को निर्जीव और पूरी तरह निर्दयी व शक्तिहीन बताया गया है।

जब कोई व्यक्ति किसी प्रतिमा को इस तरह सम्मान देता है कि जैसे उसमें कोई दिव्यता निवास करती हो—तो वह उपासना का ही एक रूप है। यह परमेश्वर को अप्रसन्न करता है, क्योंकि सच्ची उपासना केवल उसी के योग्य है। यूहन्ना 4:24 कहता है:

“परमेश्वर आत्मा है; और उसके उपासक आत्मा और सत्य से उसकी उपासना करें।”
(John 4:24, Hindi ERV)

पूजा का मतलब यह भी है कि व्यक्ति किसी वस्तु के अधीन हो जाए। उदाहरण के लिए, बार-बार माला (Rosary) जपना, या यह डर कि यदि उसे गलत तरीके से किया तो पाप लग जाएगा—ये बातें इंसान को उस वस्तु का दास बना देती हैं।
बाइबल इसे आत्मिक दासत्व कहती है।
गलातियों 5:1 में लिखा है:

“मसीह ने हमें स्वतंत्रता के लिये स्वतंत्र किया है… इसलिए फिर दासत्व के जुए में मत फँसो।”
(Galatians 5:1, Hindi ERV)

हालाँकि हर कैथोलिक इस सत्य को नहीं समझता। बहुत से लोग ईमानदारी से परमेश्वर को खोजते हैं, पर धार्मिक परंपराएँ और व्यवस्थाएँ उनकी आँखें ढँक देती हैं।
जैसा कि 2 कुरिन्थियों 4:4 कहता है:

> “इस संसार के देवता ने अविश्वासियों की बुद्धि को अंधा कर दिया
> है ...”
> (2 Corinthians 4:4, Hindi ERV)

परंतु जिन्हें परमेश्वर बुलाता है, उनकी आँखें उसका आत्मा खोल देता है; और वे झूठी परंपराओं से निकलकर परमेश्वर की सच्ची, आत्मिक और सत्य उपासना के मार्ग पर लौट आते हैं (देखें यूहन्ना 4:23).

Share on:
WhatsApp

Print this post